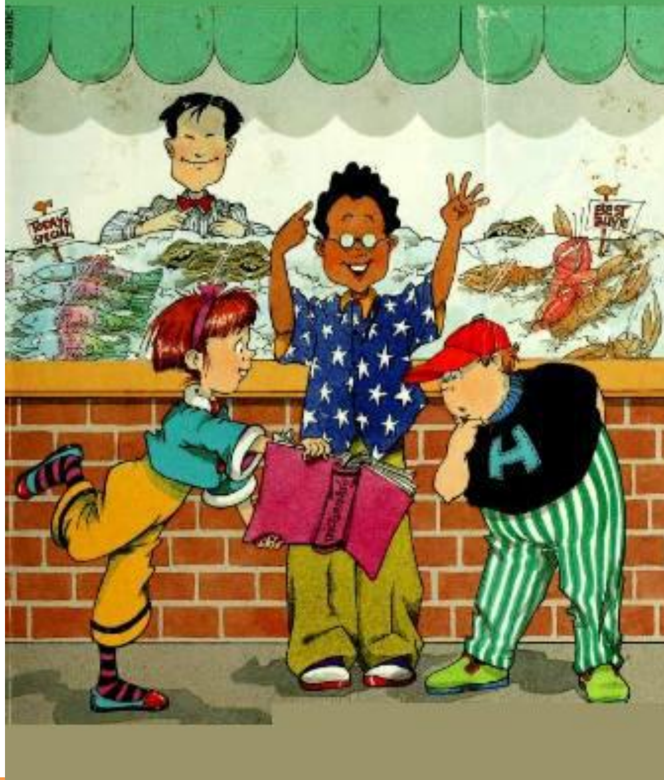
# तीन होशियार मित्र

जोएन



# तीन होशियार मित्र

जोएन



## ताज़ा मछलियाँ बेचने के लिये

ऐल सैल और हैल तीन मित्र थे.
तीनों बहुत ही होशियार थे.

एक दिन मिस्टर बिंग ने मछली की अपनी नई दुकान खोली. तीनों मित्र उन्हें देख रहे थे. मिस्टर बिंग ने खिड़की में कुछ मछलियाँ रखीं. दुकान के बाहर का रास्ता साफ किया. फिर सीढ़ी पर चढ़कर दुकान का साइन-बोर्ड लगाने लगे.



साइन-बोर्ड पर लिखा था:

**'ताज़ा मछलियाँ बेचने के लिये'**






"इस साइन-बोर्ड में कुछ गड़बड़ है," ऐल ने कहा.

"ज़रा फिर से कहो," सैल बोली.

"इस साइन बोर्ड में कुछ गड़बड़ है," ऐल ने कहा.

"हाँ, अवश्य है," हैल ने कहा.

मिस्टर बिंग तो सीढ़ी से गिरते-गिरते बचे.

"क्या गड़बड़ है?" उन्होंने पूछा. "क्या स्पेलिंग गलत हैं?"

सैल ने अपने थैले से बड़ी डिक्शनरी निकाली. उसमें देख कर कहा,

"स्पेलिंग तो ठीक हैं.'

"लेकिन इस में अभी भी गड़बड़ है," ऐल ने कहा.

"प्लीज़, मुझे बताओ क्या गड़बड़ है?" मिस्टर बिंग बोले.





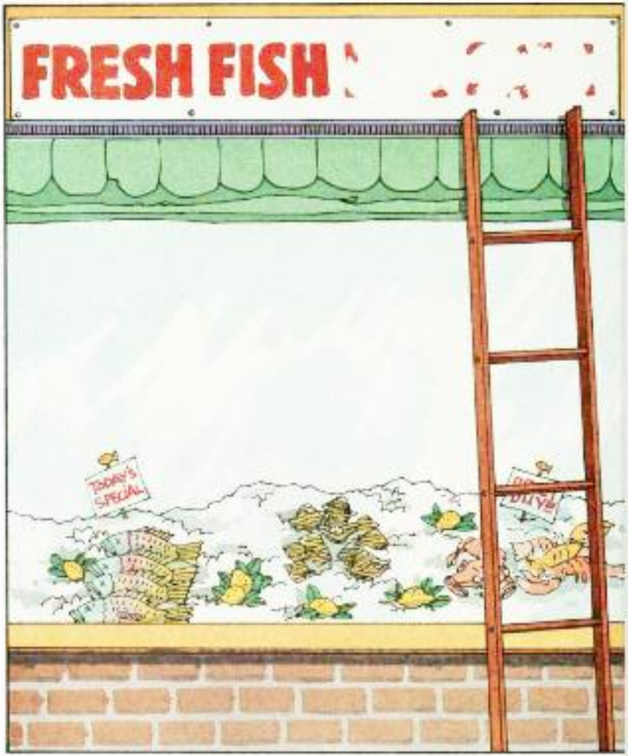
ऐल, सैल और हैल अपने सिर जोड़कर
सोचने लगे.
“आहा!” ऐल चिल्लाया. “एक, दो, तीन, चार,
पाँच शब्द.”
“बहुत अधिक शब्द हैं,” हैल ने कहा.



“इस साइन-बोर्ड में तो शब्दों की भरमार है,”
सैल बोली.
“तुम सब कितने होशियार हो,” मिस्टर बिंग बोले.
“बोर्ड पर ‘बेचने के लिये’ पेंट करने की ज़रूरत नहीं
है. सब जानते हैं कि मछली मैं मुफ्त में नहीं
बेंचता.”

मिस्टर बिंग ने 'बेचने के लिये' पेंट करके मिटा दिए. अब बोर्ड पर दो ही शब्द थे:

'ताज़ा मछली'




मिस्टर बिंग सीढ़ी से नीचे उतर आये.



ऐल, सैल और हैल हंसने लगे.
हँसते-हँसते वह लोट-पोट हो गए.
उनकी आँखों से आंसू निकल आये.



"यह साइन बोर्ड!" सैल हीं-हीं करती बोली.
"यह कितना विचित्र है!" हैल चिल्लाया.
वह थोड़ा और हंसा.
"विचित्र? विचित्र क्यों हैं?" मिस्टर बिंग ने पूछा.

“सच में मैं भोला ही हूँ,” मिस्टर बिंग ने कहा. इतना कह वह फिर से सीढ़ी पर चढ़ गये. उन्होंने ‘ताज़ा’ शब्द पेंट से मिटा दिया. अब बोर्ड पर सिर्फ एक ही शब्द बचा था:

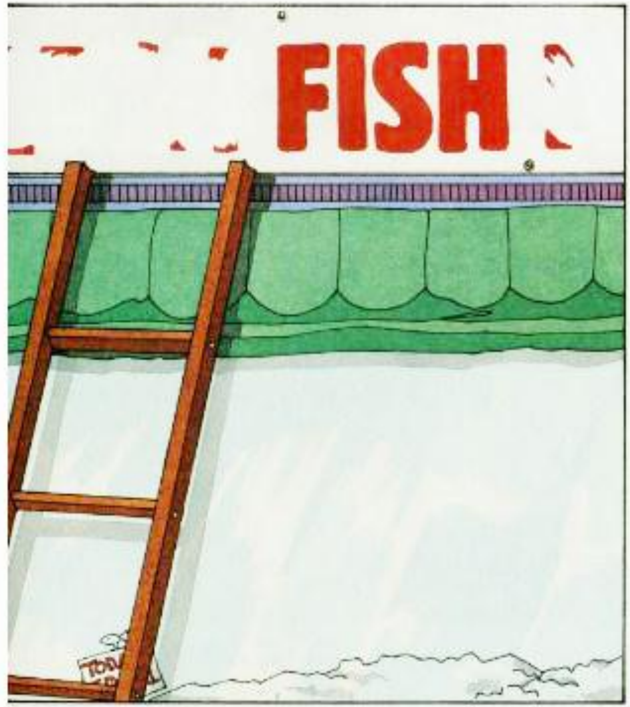
‘मछली’



हैल ने अपने थैले से टिश्यू पेपर का डिब्बा निकला. ऐल, सैल और हैल ने अपनी आँखों से बहते आंसू साफ़ किये. फिर तीनों ने अपनी नाक साफ़ की.

“ओह, यह कितना बड़ा मज़ाक है!” सैल ने कहा. “ताज़ा मछली? क्या सड़ी हुई मछली भी कभी बेची जाती है?”

“आप बड़े भोले हैं, मिस्टर बिंग,” ऐल बोला.




मिस्टर बिंग सीढ़ी से फिर नीचे आ गये.



हैल ने अपना घूंसा उन्हें दिखाया.

“यह बोर्ड मुझे गुस्सा दिला रहा है!” हैल चिल्लाया.

सैल ने अपने पाँव पटके. “मुझे भी,” वह चीखी.

“अब क्या गड़बड़ हुई?” मिस्टर बिंग घबराये से बोले.

ऐल ने हवा को सूंघा.

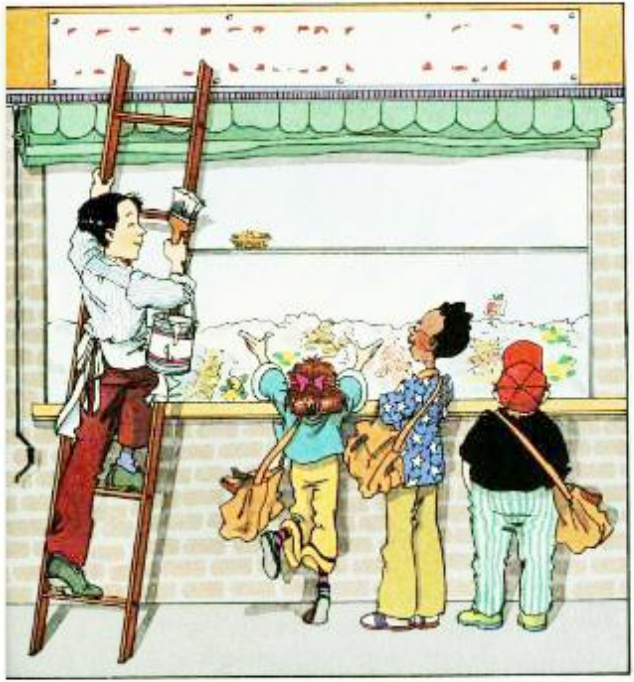
“बेशक आप मछलियाँ ही बेच रहे हैं!” ऐल ने कहा. “हम देख सकते हैं. हम सूँघ सकते हैं!”

“आप को लगता होगा कि हम होशियार नहीं है,” हैल बोला.

“मुझे क्षमा करें,” मिस्टर बिंग बोले.

वह फिर से सीढ़ी पर चढ़ गये.

उन्होंने ‘मछली’ शब्द भी पेंट कर मिटा दिया. अब साइन बोर्ड पर लिखा था:

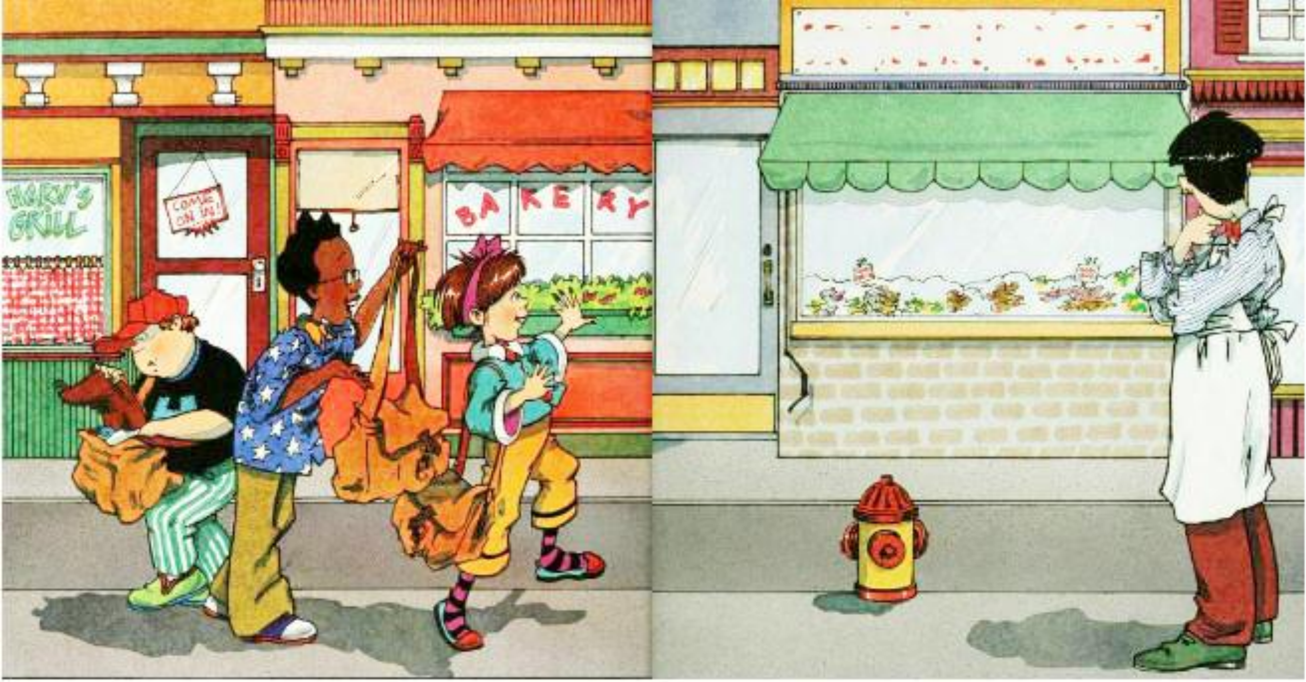


“उत्तम!” ऐल, सैल और हैल ने ज़ोर से कहा.

“उत्तम?” मिस्टर बिंग ने पूछा.

“बढ़िया!” तीनों ने कहा.

मिस्टर बिंग नीचे आ गये.




आकाश में ऊपर सूर्य चमक रहा था, गर्मी थी.

“हम पिकनिक पर जायेंगे,” ऐल ने कहा.

“हमारे थैलों में स्वादिष्ट खाना है.”

“क्या आप हमारे साथ आना चाहते हैं, मिस्टर बिंग?” सैल ने पूछा.

“नहीं, धन्यवाद,” मिस्टर बिंग बोले. “मुझे अपनी मछली बेचनी है.”

“अलविदा,” ऐल, सैल और हैल ने कहा.

“तुम्हारा दिन अच्छा बीते,” मिस्टर बिंग बोले. “और सहायता करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद.”

ऐल, सैल और हैल पिकनिक मनाने चले गये.

मिस्टर बिंग अपनी नई दुकान के बाहर, उस उत्तम साइन-बोर्ड के नीचे, खड़े रहे.



# ठीक, ठीक है!

ऐल, सैल और हैल ने झील के किनारे मज़ेदार पिकनिक की.

हैल ब्रोकली और लेटिस के सैंडविच और अचार लाया था.

ऐल नींबू का ठंडा शरबत और गर्म ग्रीन टी लाया था .

सैल हरे कप, हरी प्लेटें और हरे कांटे लायी थी.

“सब कुछ कितना स्वादिष्ट था,” ऐल ने कहा.

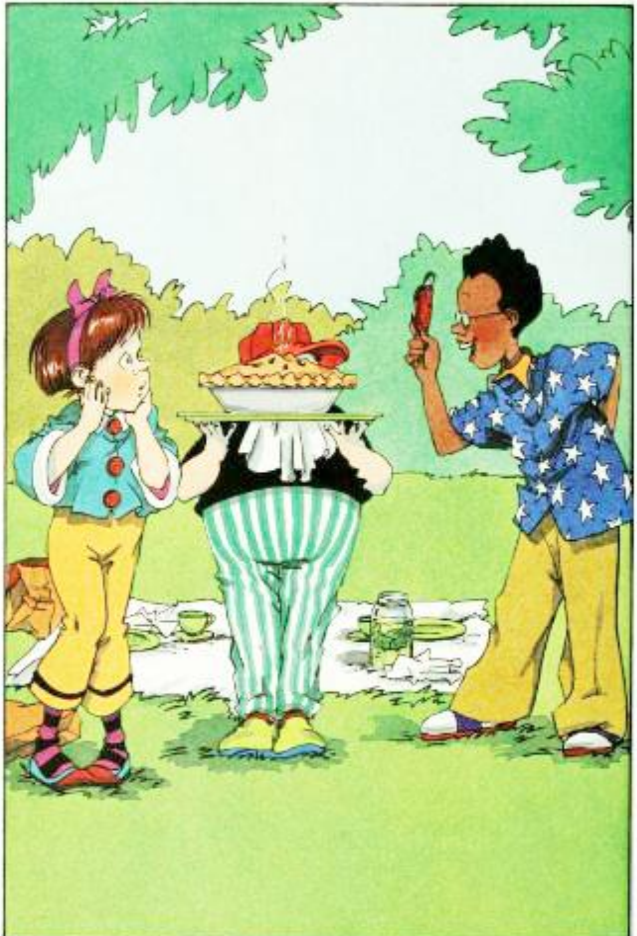
“ज़रा फिर से कहो,” सैल बोली.

“सब कुछ कितना स्वादिष्ट था,” ऐल ने कहा.

“और सब कुछ बहुत हरा था,” हैल ने कहा.

“खाने के लिए हरा सबसे स्वादिष्ट रंग है,” सैल बोली.





“मीठे में क्या है?” ऐल ने पूछा.

“हरे सेब का बना केक,” हैल ने बताया. “मैं सबसे बढ़िया केक बनाता हूँ.” उसने अकड़ कर दोनों की ओर देखा.

लेकिन सैल कुछ परेशान लग रही थी.

“हे भगवान, मैं चाकू लाना तो भूल ही गयी,”

वह बोली.

“यह रहा मेरा चाकू,” ऐल ने कहा. “मैं कभी-कभी इससे लकड़ी तराशता हूँ.”

“केक को तीन बराबर टुकड़ों में काटो,” हैल ने कहा.

“बेशक, यही उचित होगा,” ऐल ने कहा.

ऐल ने केक के तीन एक जैसे टुकड़े किये.

“चलो खायें,” हैल बोला.

ऐल, सैल और हैल ने अपने-अपने कांटे उठाये.




ऐल सैल हैल



“रुको,” हैल चिल्लाया. “यह सही नहीं है.
मैंने यह केक बनाया था.
मुझे थोड़ा अधिक मिलना चाहिये.”



“बात तो तुम ठीक कह रहे हो,” सैल बोली.
“यही उचित होगा,” ऐल ने कहा.
ऐल और सैल ने अपने टुकड़ों से आधा–आधा हिस्सा काट कर हैल को दिया.






ऐल, सैल और हैल ने अपने-अपने कांटे फिर उठाये.
“रुको,” सैल बोली. “यह अभी भी सही नहीं है. हैल ने मेरे पेड़ से सेब तोड़े थे. मुझे भी थोड़ा अधिक केक मिलना चाहिये.”



“बात तो तुम ठीक कह रही हो,” हैल बोला.
“यही उचित होगा,” ऐल ने कहा.

तो ऐल और हैल ने अपने केक के टुकड़ों से आधे-आधे काट कर सेल को दे दिए.






सेल और हैल ने अपने-अपने कांटे उठाये. ऐल ने काँटा नहीं उठाया. उसने अपनी प्लेट को देखा. “यह सही नहीं हैं,” ऐल ने कहा.



“यह बिल्कुल सही है,” हैल ने कहा.
“अगर मैं यह केक न बनाता तो
हम इसे खा न रहे होते.”
“यह बिल्कुल सही है,” सैल बोली.
“मेरे सेबों के बिना हम
यह केक खा न रहे होते.”
सैल और हैल ने फिर अपने कांटे उठाये.



“रुको,” ऐल ने चिल्ला कर कहा.
“मेरे चाकू के बिना तुम यह केक के टुकड़े
न खा रहे होते.”



“बात तो तुम ठीक कह रहे हो,” सैल और हैल ने
कहा. “जो सही वही उचित है,” ऐल बोला.
अब सैल और हैल ने अपने हिस्से से
आधे-आधे टुकड़े ऐल को दे दिए.






“अच्छा हुआ बात सुलझ गयी,” सैल ने कहा.
“चलो खायें,” हैल ने कहा.
ऐल, सैल और हैल ने कांटे उठाये और
हरे सेब से बने केक को मज़े से खाने लगे.

## हैल की रेस

खाना खाने के बाद ऐल बैठ कर लकड़ी तराशने लगा. सेल अपनी बड़ी डिक्शनरी पढ़ने लगी.

हैल सो गया.

"गर्र..गर्र..गर्र.." किसी ने आवाज़ की.

हैल उठ बैठा. "यह किस की आवाज़ थी?" उसने पूछा.

"यह किस की आवाज़ थी?" सैल ने पूछा.

"यह आवाज़," हैल बोला. "एक डरावने, रोयेंदार जीव की है जिसकी एक आँख और सात रोयेंदार टाँगे हैं. वह हमारा शिकार करने आया है."



अब हैल सो न पाया.

उसने अपने कपड़े उतार दिये.

उसने लाल रंग का स्विमसूट पहन रखा था.

“मेरे साथ कौन झील के आर-पार तैरने का मुकाबला करेगा?” हैल ने पूछा.

“मैं तो बस अपनी डिक्शनरी पढ़ना चाहती हूँ,” सैल बोली.

“मैं तो बस लकड़ी तराशना चाहता हूँ,” ऐल ने कहा.





हैल ने अपना घूंसा दिखाया.

“मैं उसको मार डालूँगा!” वह चिल्लाया.

“मूर्ख.” सैल बोली. “वह जीव तुम ही हो.
तुम खर्राटे ले रहे थे.”

“ओह,” हैल बोला.

“लेकिन मैं मुकाबला करना चाहता हूँ,” हैल बोला.

“मैं अकेले कैसे मुकाबला कर सकता हूँ?”

“मेरे पास बढ़िया सुझाव है!” सैल बोली.

उसने अपने थैले से एक बड़ी से घड़ी निकाली.

“इस घड़ी के साथ मुकाबला करो,” उसने कहा.

“बुद्धू,” हैल बोला. “घड़ी तैर नहीं सकती!”

“मैं घड़ी का अलार्म लगा देती हूँ जो दस मिनट बाद बजेगा,” सैल बोली. “अलार्म बजने से पहले तुम झील के आर-पार तैर कर आओ.”

“मैं घड़ी को हरा दूंगा!” हैल चिल्लाया.

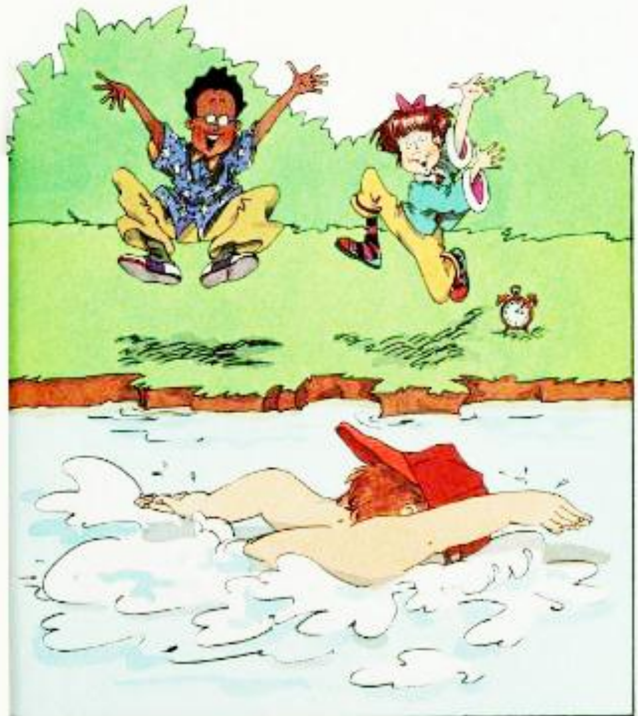




एक और मिनट बीत गया. हैल तेज़ तैरने लगा.

एक और मिनट बीता. हैल और तेज़ तैरने लगा.

एक और मिनट, फिर एक और मिनट, फिर एक और मिनट बीता.



सैल ने अलार्म लगा दिया. हैल झील में कूद गया.

एक मिनट बीत गया. हैल तेज़ तैरने लगा. एक और मिनट बीत गया, हैल और तेज़ तैरने लगा. एक और मिनट, फिर एक और मिनट, फिर एक और मिनट बीता. हैल झील के दूसरे किनारे पहुँच गया.

वह वापस घूमा.

“शाबाश!” ऐल और सैल ने उसको उत्साहित किया.



“ट्रिन...ट्रिन!” घड़ी का अलार्म बजा.

“दस मिनट पूरे हुए,” सैल बोली.

लेकिन हैल अभी भी तैर रहा था.

उसे किनारे तक आने में एक मिनट और लगा.



“मैं घड़ी को हरा नहीं पाया,” हैल बोला.

“तुमने पूरा प्रयास किया,” ऐल बोला.

“ज़रा फिर से कहो,” हैल ने कहा.

“तुम ने पूरा प्रयास किया,” ऐल बोला.

“मैं अपने नीले स्विमसूट में बहुत तेज़ तैर सकता हूँ,” हैल बोला. “अगली बार मैं वही पहनूंगा.”

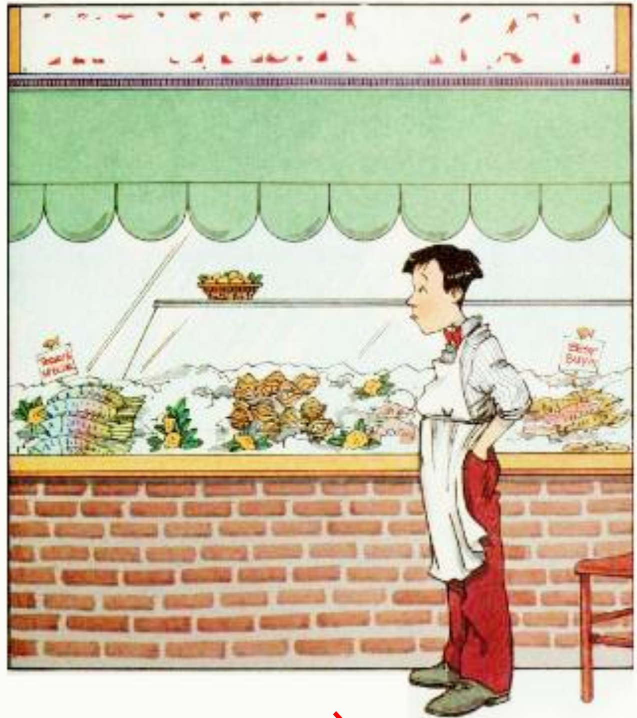
"अगली बार मैं बारह मिनट का अलार्म लगाऊँगी." सैल ने कहा. "फिर तुम घड़ी को हरा दोगे."

"अरे, कितना बढ़िया विचार है," हैल ने कहा.

"हम कल फिर यहीं आयेंगे."

फिर ऐल, सैल और हैल नगर की ओर वापस चल दिए.





## गजब का शो

मिस्टर बिंग अपनी दुकान के बाहर ही खड़े थे.
सूर्य अस्त होने वाला था.
तभी ऐल, सैल और हैल आ पहुंचे.

“क्या आज तुम लोगों ने खूब मज़ा किया?” मिस्टर बिंग ने पूछा.

“ओह, हाँ,” हैल बोला.

“खूब मज़ा आया.” ऐल बोला.

“ज़रा फिर से कहो,” सैल बोली.

“खूब मज़ा आया,” ऐल बोला.

“क्या आपका दिन अच्छे से बीता, मिस्टर बिंग? सैल ने पूछा.



मिस्टर बिंग थोड़ा उदास लगे.

“नहीं,” उन्होंने कहा. “आज का दिन तो खराब रहा. किसी ने मेरी मछलियाँ नहीं खरीदीं.

अब जल्दी मेरी मछलियाँ बासी हो जायेंगी.”

“यह तो बड़ी समस्या है,” हैल ने कहा.



“आहा!” ऐल चिल्लाया. “हमने एक बढ़िया योजना सोची है.”

“आपको एक साइन-बोर्ड चाहिये,” हैल ने कहा.

“एक साइन-बोर्ड जिससे आपकी सारी मछलियाँ बिक जायेंगी.”





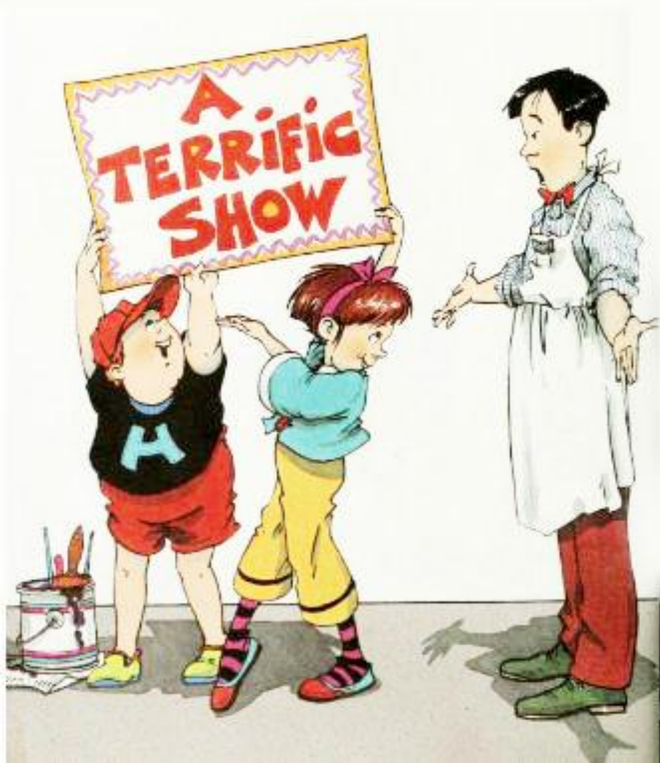
“प्लीज़, मेरी सहायता करो. कोई अच्छी-सी योजना सोचकर बताओ.” मिस्टर बिंग बोले.

ऐल, सैल और हैल अपने सिर जोड़कर सोचने लगे.

“मैं भी ऐसा ही कुछ सोच रहा था,” मिस्टर बिंग बोले.

फिर ऐल, सैल और हैल ने मिस्टर बिंग के लिए एक साइन बोर्ड बनाया. साइन बोर्ड पर लिखा था:

‘एक शानदार प्रदर्शन’




“उत्तम!” ऐल, सैल और हैल ने एक साथ कहा.

“उत्तम?” मिस्टर बिंग ने पूछा.

‘उत्तम,” तीनों ने कहा.

ऐल, सैल और हैल दुकान के बाहर उस उत्तम साइन बोर्ड के नीचे खड़े हो गये.

“आइये, सब आइये!’ ऐल चिल्लाया.





“प्रवेश टिकट सिर्फ पन्द्रह सेंट!” सैल चिल्लाई.

“हरेक को प्रवेश करने पर पुरस्कार मिलेगा!” हैल ने चिल्ला कर कहा.

कई लोग उस शानदार प्रदर्शन को देखने आये. जो लकड़ियाँ ऐल ने तराशीं थीं उनसे वह करतब करने लगा.

हैल नाचने लगा. सैल ने एक गाना गया.

मिस्टर बिंग ने एक संगीत-यंत्र बजाया.

हरेक को प्रवेश पुरस्कार मिला, एक ताज़ा मछली!

मिस्टर बिंग ने पैसे गिने. अब वह प्रसन्न थे.

“तुम सब का बहुत-बहुत धन्यवाद,” उन्होंने कहा.



“एक, दो, तीन, चार,” सैल बोली. “सिर्फ चार मछलिया ही बचीं हैं.”

“उत्तम! मैं अपने मित्रों के लिये डिनर बनाऊंगा,” मिस्टर बिंग ने कहा.

“कितना बढ़िया विचार है,” ऐल ने कहा.

“ज़रा फिर से कहो,” सैल और हैल ने कहा.

और ऐल ने फिर से कहा.

**समाप्त**